विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : 4 ■ नवम्बर २०२४

आधुनिक गुरुकुल

...आखिर 2008 में उन्होंने अपने हाथों से स्कूल के हिस्से का पहाड़ खोदना शुरू कर दिया। "गांव उस वक्त इतना पिछड़ा हुआ था कि लोगों को स्कूल से कोई लेना-देना नहीं था। गांववालों को यह काम अनावश्यक लगा। उन्होंने बिल्कुल अनदेखा कर दिया। मैं कई दिनों तक अकेले ही पहाड़ खोदता रहा," शिक्षक श्री राजेन्द्र परतेकी बताते हैं।

पालडोह (चंद्रपुर): यहां बच्चों का दिन सुबह 4:30 बजे शुरू होता है। खेल, व्यायाम, योग, प्राणायाम होते हैं। 7:30 बजे के बाद बच्चे नहा-धोकर ठीक 9 बजे स्कूल के परिसर में एकत्रित होते हैं। मिलकर परिसर की सफाई करते हैं, एक-एक कक्षा, दालन और मैदान भी खुद ही स्वच्छ करते हैं। परिसर के पौधों को खाद-पानी देते हैं।

बच्चे स्वयं ही ये सब करते हैं, वो भी बिना किसी निगरानी के; और ठीक 10 बजे परिपाठ के लिए कतार में खड़े होते हैं। प्रार्थना और चिंतन - कौन कैसे प्रस्तुत करेगा इन सब की योजना बच्चे ही सुनिश्चित करते हैं। 11 बजे वे सब बैठकर नाश्ता करते हैं....

और फिर शुरू होती है पढ़ाई। मध्याह्न भोजन के अलावा पूरा समय पढ़ाई में बीतता है। शाम 5:30 बजे एक घंटे का अवकाश और फिर सब एकत्रित होते हैं स्वाध्याय के लिए। गाँव में कोई भी बाहर घूमता दिखाई दे तो उसे दंड दिया जाता है।

यह किसी समर कैंप का किस्सा नहीं, नित्य कार्यक्रम है महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के जीवती तहसील में बसे पालडोह जिला परिषद शाला का। यह शिक्षण और प्रशिक्षण यहां पर निरंतर चलता है — साल के 365 दिन। जीवती तहसील एक दुर्गम, पिछड़ा हुआ और नक्सल-प्रभावित क्षेत्र रहा है। ऐसी जगह पर एक सरकारी शाला को ऐसे गुरुकुल में परिवर्तित करनेवाले शिक्षक हैं श्री राजेंद्र परतेकी। राजेंद्र जी ने अपने छोटे-छोटे दृढ़ निर्णयों की ताकत से अशिक्षा का यह पहाड़ खोदकर यहां एक छोटा सा विद्यापीठ निर्मित किया है।

वे 2006 में यहां नियुक्त हुए, तब उन्होंने पाया कि स्कूल के लिए पहाड़ की ढलान पर एक छोटी सी जगह दे दी गई है, जहां बच्चे खेलना-दौड़ना तो दूर, सीधे खड़े भी नहीं हो पाते थे। 4 कक्षाएं और 22 छात्र थे। स्कूल की धरती समतल करवाने के लिए 2 साल तक प्रशासन और गांववालों को वे समझाते रहे। आखिर 2008 में उन्होंने अपने हाथों से स्कूल के हिस्से का पहाड़ खोदना शुरू कर दिया।

गांववालों को यह काम अनावश्यक लगा। इसलिए गांववाले उनसे दूरी बनाए हुए थे। उनकी कड़ी मेहनत देखकर जब स्कूल के कुछ बच्चे उनकी मदद करने लगे तो उन्हें डांटकर वापस बुला लिया गया। गांववाले कहते थे, "शिक्षकों को स्कूल के काम करने के लिए वेतन मिलता है। हमारे बच्चों को इस काम में क्या मिलना है?"

लेकिन राजेंद्र जी 5 साल तक काम करते रहे। धीरे-धीरे उनका निश्चय, अनुशासन, और बच्चों के विकास के लिए उनके प्रयासछात्रों द्वारा लोगों तक पहुंचने लगे। पढ़ाई में छात्रों की प्रगति देखकर उन्हें शिक्षा का महत्व भी समझ आने लगा। विरोध में खड़े गांववाले अब उनके साथ खड़े थे।

राजेंद्र जी ने उन्हें आगे की योजना सुनाई। स्कूल की मौजूदा इमारत में केवल दो कक्षाएं थीं, इसलिए पहाड़ की तलहटी में एक दूसरे भूखंड पर बड़ी इमारत बनाना ज़रूरी था। इसका खर्च 2 लाख रुपयों से

शेष पृष्ठ २ पर...

विनोबा कथावली के इस संस्करण में उन शिक्षकों की कहानियाँ हैं, जो मानते हैं कि अगर वे शिक्षा में उत्कृष्टता के पुरस्कार लेते रहें और अपने बच्चों को निजी स्कूल में भेजें, तो यह पाखंड होगा। इन सभी के बच्चें सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं। "सरकारी स्कूल भी उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा दे सकते हैं ये अभिभावकों को समझाने का इससे अधिक प्रभावी तरीका नहीं हो सकता," वे सभी एक स्वर में कहते हैं।

(पृष्ठ 1 से)

आधुनिक गुरुकुल

ज़्यादा होने वाला था। गांववालों ने उन्हें आश्वस्त किया और सबने मिलकर धन इकट्ठा किया। अंत में कुछ 40 हजार रुपये कम पड़ रहे थे। तब गांव के मंदिर की दानपेटी में रखे पैसे इसमें जोड़कर रकम पूरी की गई। "मंदिर के पैसे का शिक्षा कार्य से अधिक सार्थक उपयोग क्या हो सकता था? खुशी की बात ये है कि यह निर्णय गाँववालों ने लिया था," ये बताते हुए आज भी राजेन्द्र जी भावुक होते हैं। शाला के लिए नई इमारत का निर्माण हुआ। स्कूल में अब तक सातवीं तक कक्षाएं शुरू हो गई थीं।परतेकी सर के साथ बच्चों का भाषाएं, गणित, विज्ञान, इतिहास, आदि विषयों को स्वाध्याय से आत्मसात करने का बहुमूल्य कौशल विकसित हो रहा था। "मैं छात्रों को अनुशासन का महत्व और समय का सही उपयोग सिखाता हूँ, जो जीवन में सबसे ज़रूरी है," राजेंद्र जी कहते हैं।

आज उनके विद्यार्थी थ्योरी और प्रैक्टिकल दोनों में उतने ही माहिर हैं। साथ ही खेलों में, वक्तृत्व में, कलाओं में जिला और राज्य स्तर पर अव्वल रहते हैं। हाल ही में शाला को कक्षा 9 के लिए शिक्षा विभाग की स्वीकृति मिली है; और अगले ही वर्ष कक्षा 10 शुरू होगी। छात्रों की संख्या अब 160 से ऊपर हो गई है। आस-पास के गांव के बच्चे भी यहां पढ़ने आते हैं।

राजेंद्र जी का बेटा इसी स्कूल के कक्षा 3 में पढ़ता है, लेकिन उसकी तैयारी ऐसी है कि वह कक्षा 6 की विद्यार्थियों को भी अभ्यास में सहयोग करता है।

शिक्षा विभाग के कितने ही अधिकारी अब राजेंद्र जी को मानने लगे हैं। उन्हें हर तरह से मदद करते हैं। जिला और तहसील स्तर का हर अधिकारी इस स्कूल को एक बार देखने ज़रूर आता है। स्वयंसेवी संस्थाओं के अलावा कुछ शिक्षा प्रेमी भी अर्थदान करते हैं, ताकि यह कार्य अबाधित रहे।

365 दिन चलने वाला स्कूल ! फिर दिवाली और गर्मी की छुट्टियों में यहाँ होता क्या है?

छुट्टियों में छात्रों के लिए खेल-कूद और कौशल विकास के साथ साथ ऐसे रोचक उपक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनसे कमजोर छात्रों को अपने विषयों की कमियों को दूर करने में मदद मिलती है, ताकि वे अगली कक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार हों। पढ़ाई में तेज छात्र अपने साथियों को पढ़ातेहैं, प्रश्न पत्र तैयार करते हैं और उनकी तैयारी भी नापते हैं।

लेकिन आज भी सब कुछ आसान नहीं हुआ है। आज भी स्कूल में केवल 5 ही शिक्षक हैं। क्योंकि ज़्यादातर शिक्षक 'यहां बहुत काम करना पड़ता है' ऐसी अफवाहों से डरकर, और 'परतेकी सर के कड़े अनुशासन' की कहानियां सुनकर यहां आना नहीं चाहते। राजेंद्र जी ने इसका भी समाधान खोज लिया है। उन्होंने स्कूल के छात्रों को ऐसा तैयार किया है कि वे निचली कक्षाओं के विद्यार्थियों को सारे विषय

सिखाते हैं, उनकी परीक्षा लेकर उनके समझ की पुष्टि भी कर लेते हैं। साथ ही, परतेकी सर ने आस-पास के शिक्षित बेरोज़गार युवकों को स्कूल में 'शिक्षाप्रेमी' नियुक्त किया है, जो बच्चों को दिल लगाकर पढ़ाते हैं। ऐसे 'शिक्षाप्रेमियों' को सरकारी वेतन नहीं मिलता, पर जिले के कुछ डॉक्टरों के नियमित अर्थदान से इन्हें पारिश्रमिक दिया जाता है।

श्री राजेंद्र परतेकी के खून-पसीने से सींचे पालडोह जिला परिषद शाला के तेजोवलय में हर सच्चा शिक्षाप्रेमी पहुँच ही जाता है। इस आधुनिक गुरुकुल से भविष्य में ऐसे सैंकड़ों और शिक्षाप्रेमी निर्मित होंगे।इस महान कार्य को विनोबा टीम का दंडवत।

विनोबा म्हणे

विनोबा म्हणे,
मी सर्वांसाठी तत्पर।
पोस्ट शेअर करुन
इतरांनाही लाइक कर ।।1।।
शिक्षकांसाठी मी आहे
एक खुले व्यासपीठ ।
बेस्ट उपक्रमाबरोबर देतो
विद्यार्थ्यांना बक्षीसांची भेट ।।2।।
स्पेलिंग बी, स्पोकन इंग्लिश
इतरही उपक्रमांची होते संगत।
शाळेत विद्यार्थ्यांच्या अभ्यासाची
वाचनासोबत वाढे रंगत।।3।।
म्हणूनच करा विनोबाचा वापर
शेअर करा नि लाइक करा एकमेकांस।
सन्मानपत्राने कौतुकाची मिळते थाप
बक्षीस मिळते मात्र हमखास ।।4।।
विनोबा आहे प्रेरणादायी ॲप
ओपन लिंक फाऊंडेशनची साथ ।
भरुन काढू बक्षीसासाठी गैप
एकमेकांना पुढे जाण्यास देऊया हाता।।5।।

सौ. विद्या खिंद्रा पाटील
जि.प. शाळा वाकी ता. इगतपुरी, जि. नाशिक

बुलढाणा: ओपन लिंक फाउंडेशन के चीफ ऑफ ऑपरेशन्स (COO) विश्वजीत पवार, उनके सहकारी वैदेही शालू और राजेश राजक ने हाल ही में बुलढाणा जिले के DIET के प्राचार्य डॉ. जे. ओ. भटकर से मुलाकात की और उनके साथ शिक्षा कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन पर विस्तार से चर्चा की।

धमतरी: 5 अक्टूबर को आयोजित के 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कार समारोह में सितंबर 2024 के विजेता काहकशां ताज और राकेश कुमार चंद्राकर को सम्मानित किया गया। इस भव्य कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, 2 कैबिनेट मंत्री, 2 सांसद, 2 विधायक, और जिला मजिस्ट्रेट श्रीमती नम्रता गांधी उपस्थित थे।

जशपुर: अक्टूबर में आयोजित कार्यक्रम में 13 शिक्षकों और 3 क्लस्टर शैक्षणिक समन्वयकों को सम्मानित किया गया। जशपुर कलेक्टर डॉ. रवि मित्तल के हाथों शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर डिप्टी कलेक्टर बिशन कुमार भी उपस्थित थे।

अहमदनगर: हाल ही में जिले के दिघेवस्ती गॉव के जिला परिषद स्कूल में आयोजित एक कार्यक्रम में 3 शिक्षकों को दिघेवस्ती स्कूल के प्रधानाध्यापक के हाथों 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जांजगीर-चांपा: 9 अक्टूबर को विनोबा पोलस्टार NIT रायपुर के कुछ छात्रों ने ग्रामीण क्षेत्रों से चयनित छात्रों को JEE की तैयारी में मदद करने के लिए जांजगीर-चांपा के आकांक्षा स्कूल के शिक्षकों के साथ संवाद स्थापित किया। विनोबा टीम की ओर से डिवीजन मैनेजर श्री. जितेंद्र सिंह, श्री अज़हरुद्दीन शेख और श्री हेमंत साहू उपस्थित थे।

नागपुर: जिला परिषद द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में, जिले के 8 शिक्षकों को शिक्षा अधिकारी (प्राथमिक) श्री सिद्धेश्वर कलुसे के हाथों विनोबा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 5 शिक्षकों को सबजोन पोस्ट ऑफिस मंच द्वारा, और 3 केंद्र प्रमुखों को महावाचन उपक्रम के तहत, शीर्ष 3 केंद्र प्रमुखों को सम्मानित किया गया। विनोबा टीम के विशाल डाहाट और निलेश नागपुरे उपस्थित थे।

पुणे: 11 अक्टूबर को पुणे जिला परिषद में अगली तिमाही के लिए विद्यालय शिक्षा गतिविधियों की योजना बनाने हेतु एक बैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री संतोष पाटिल, उप शिक्षा अधिकारी श्री सुनील गच्चे, DIET के प्राचार्य श्री वाटेकर, DIET के श्री शिरसागर और सुश्री बच्चाव, विनोबा टीम से भैरव गायकवाड़ और रोहित गरोले, तथा CLR से धीरज और वृषाली उपस्थित थे।

गढ़चिरोली : हाल ही में जिला स्तर पर आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में गढ़चिरोली जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुश्री आयुषी सिंह ने 5 शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कार से सम्मानित किया। 9 अन्य शिक्षकों को परिपाठ, महावाचन, और स्पोकन इंग्लिश कार्यक्रम में उनके कार्य के लिए सम्मानित किया गया। दो शिक्षकों को पुस्तकालय बैग दिए गए। शिक्षा अधिकारी श्री नकाड़े और श्री पवार इस अवसर पर उपस्थित थे।

'विनोबा ऐप से सरकारी सिस्टम की पारदर्शिता बढ़ी है' – श्रीमती नम्रता गांधी, कलेक्टर, धमतरी

धमतरी: "एक प्रशासक के तौर पर, मेरा मानना है कि स्कूल की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो बच्चों को जीवन की चुनौतियों से निपटने और अपना रास्ता खुद बनाने के काबिल बनाए। सबसे बड़ी चुनौती ये है कि पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़कर शिक्षा को जीवन से कैसे जोड़ें। अगर हम ऐसा कर पाएं, तो बच्चे सही-गलत का फर्क समझने, अपनी आजिविका ढूंढने, और सिर्फ नौकरी के बजाय उद्यमिता का साहस करने लायक बनेंगे। जब शिक्षा उन्हें सशक्त बनाने लगेगी, तभी शिक्षा व्यवस्था सफल कहलाएगी।"

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले की कलेक्टर श्रीमती नम्रता गांधी से विनोबा टीम की बातचीत हुई। तब उन्होंने 'राज्य की शिक्षा व्यवस्था और OLF का योगदान' इस विषय के कई पहलुओं पर खुलकर अपने विचार साझा किए।

छत्तीसगढ़ एक विकासशील राज्य है। लोगों की आकांक्षाएँ बढ़ रही हैं, लेकिन सुधार की गति धीमी है। इसमें धमतरी और कुरुद ब्लॉक के शिक्षा मानक पहले से ही बेहतर हैं। इन क्षेत्रों का बुनियादी ढाँचा भी राज्य के अन्य हिस्सों की तुलना में उत्कृष्ट है। हालांकि, मगरलोड और नगरी जैसे आदिवासी क्षेत्रों में छात्रों को स्कूल में बनाए रखना मुश्किल होता है। फिर भी, धमतरी के शिक्षा परिणाम उल्लेखनीय रहे हैं; इस वर्ष कक्ष 10 और 12 में राज्य स्तर पर क्रमशः 7% और 11% की बढ़ोतरी हुई है।

हमारे कई शिक्षक प्रभावी ढंग से समाज के विभिन्न घटकों को शिक्षा प्रक्रिया में शामिल कर रहे हैं। राज्य सरकार की कई योजनाएँ इन प्रयासों को बल दे रही है, जैसे न्योता भोज, सरस्वती साइकिल वितरण, निशुल्क पाठ्यपुस्तक और गणवेश वितरण, निरक्षर वयस्कों को साक्षर बनाने के लिए प्रोजेक्ट उल्लास, और FLN. मिशन अव्वल, जो 2023-24 में कक्षा 10 और 12 के लिए शुरू किया गया, बहुत प्रभावी रहा। इस कार्यक्रम को अब प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में भी लागू किया गया है।

हम तकनीक का उपयोग कर के शिक्षकों के गैर-शैक्षणिक (non-academic) कार्य कम करवाना चाहते हैं। OLF इस दिशा में बहुत अच्छा काम कर रही है। मेरे विचार से शिक्षकों के छुट्टी के आवेदन एवं अन्य संबंधित दस्तावेज़ भी इसी माध्यम से साझा हो सकते हैं, जिससे डेटा तुरंत उपलब्ध होगा और समय और संसाधनों का सही उपयोग होगा।

सरकारी शिक्षा प्रणाली की कमियाँ और उनके समाधान को लेकर स्पष्टता रखनेवाले श्रीमती नम्रता गांधी जैसे आईएएस अधिकारी OLF के मिशन के लिए सदा मार्गदर्शक रहे हैं। शिक्षक सहायक कार्यक्रम के यात्रा पर चली विनोबा टीम नम्रता जी जैसी तेजस अधिकारियों को बड़ी आशा से देखती है।

– श्री संजय डालमिया, संस्थापक ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF)

- ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के विनोबा ऐप से कागज़ी काम काफी कम हो गया है। जैसे मिड-डे मील, उपस्थिति, बैगलेस-डे के उपक्रम, जाति प्रमाणपत्र रिपोर्ट्स आदि के आवेदन विनोबा ऐप के माध्यम से संकलित किए जा रहे हैं।
- हम हर महीने OLF के कार्यक्रमों द्वारा शिक्षकों का सम्मान करते हैं, जिससे हर महीने शिक्षकों से प्रत्यक्ष मिलकर उनके अनुभव और उपयुक्त कार्य प्रणालियाँ हम देख सकते हैं।
- शिक्षकों को पिअर लर्निंग याने आपस में सीखने का अवसर मिलता है। उनका काम यहाँ पर सराहा जा रहा है, जो अन्यथा नहीं होता।
- इसका ट्रेंड अनैलिसिस हमें बताता है कि कौन सा स्कूल किस विषय में पिछड़ा हुआ है, कौन से शिक्षक या स्कूल प्रशासन कमजोर है, कौन से अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।
- शिक्षकों के पोस्ट और अपडेट्स का विश्लेषण दिखाता है कि वे कौन से विषय छात्रों को बेहतर ढंग से पढ़ा सकते हैं।
- अनेक योजनाएँ लागू होती हैं, पर फील्ड में वो कहाँ तक पहुंची है, इसकी लगातार जानकारी मिलते रहना जरूरी है। इसमें विनोबा ऐप से मदद हो रही है।

'शिक्षा: एक सामुहिक ज़िम्मेदारी'

अगर एक खुशहाल समाज निर्मित करना है तो शिक्षा और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा। एक शिक्षित और स्वस्थ जवान अपनी बाकी ज़रुरतों का इंतजाम आसानी से कर लेगा। बच्चों को ये सीखाना होगा कि शिक्षा या विद्यार्जन एक यात्रा है, और परीक्षा केवल एक पड़ाव, जिससे गुज़रकर उनका जीवन निखरनेवाला हैं। उन्हें परीक्षा के दबाव से बचने की बजाय परीक्षा का सही उपयोग सिखाएँ। तनाव को टालने के बजाय व्यायाम, खेल, कला, संगीत से उसे संतुलित करना सिखाएँ।

'छात्रों के लिए कार्य कर पाना ही मेरा पुरस्कार'

जांभोल (जलगांव): "सरकार हमें इस काम का वेतन देती है, जो हम स्कूल में कर रहे हैं। इसलिए हम आम तौर पर पुरस्कारों को पाने की न आशा रखते हैं और न ही कोशिश करते हैं।"

ये हैं श्री गणेश माली, जो जलगांव जिले के जामनेर तहसील में स्थित जांभोल जिला परिषद (ZP) शाला में शिक्षक हैं। कठिन परिस्थितियों में 15 साल तक काम करने के बाद भी उनका मानना है कि 'अपने कर्तव्य का निर्वहन कर पाना' ही उनका असली इनाम है। इसके लिए कोई विशेष पुरस्कार की अपेक्षा करना सही नहीं होगा।

गणेश जी 2009 में सोलापुर के सांगोला जिला परिषद शाला में नियुक्त हुए। 2016 में उनका तबादला नांद्रा पीएल (प्रगनी लोहरा) में हुआ, जहां उन्हें बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। उस स्कूल में 62 छात्र थे, लेकिन स्कूल की हालत दयनीय थी। सौभाग्य से, प्रधानाध्यापिका श्रीमती वैशाली घोंगडे ने उन्हें स्कूल के सुधार के लिए पूरी स्वतंत्रता दी।

उनके साथ एक और शिक्षक थे। श्रीमती घोंगडे और दोनों शिक्षकों ने अपनी जेब से 5,000 रुपयों का योगदान देकर स्कूल में एक बगीचा तैयार किया, ताकि स्कूल का वातावरण सुंदर और आकर्षक लगे। इस छोटे से बदलाव ने कुछ लोगों का ध्यान आकर्षित किया। साथ ही उन्होंने अलग अलग उपक्रम शुरू किए; स्कूल में अनुशासन लाया; पढ़ाई की ऐसी योजना बनाई कि खेल खेल में बच्चे विषय भी सीखने लगे और उनका व्यक्तित्व विकास भी होने लगा। छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ा। उन्हें स्कूल से प्रेम हो गया।

"अब बच्चे देर तक स्कूल में पढ़ते रहते हैं। उन्हें यहाँ अच्छा लगता है। अंधेरा हो जाने के बाद उन्हें जबरदस्ती घर भेजना पड़ता है," श्रीमती घोंगडे गर्व से बताती हैं। कुछ ही समय में छात्रों के माता-पिता भी इस प्रयास में शामिल हो गए। स्कूल का बगीचा और भी हरा भरा हो गया। कुछ वर्षों बाद, स्कूल इतना सुंदर हो गया कि लोग यहां प्री-वेडिंग शूट और अन्य कार्यक्रम के लिए किराये से लेने लगे। स्कूल और सारा गाँव जैसे एक परिवार बन गया।

गणेश जी को पूरा विश्वास था कि वे छात्रों के जीवन को बेहतर बना सकते हैं। इसे साबित करने के लिए उन्होंने खुद की बच्ची को भी अपनी स्कूल में दाखिल करवाया। जहाँ ज़रूरत पड़ी, वहाँ अतिरिक्त समय देकर बच्चों के लिए पढ़ाई को मज़ेदार बनाया। उनकी मेहनत रंग लाई। राज्य स्तरीय मंथन प्रतियोगिता में उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया। जैसे-जैसे स्कूल बेहतर होता गया, कई प्रतिष्ठित परिवार भी इससे जुड़ गए। सामुदायिक भागीदारी से स्कूल समृद्ध होने लगा – डिजिटल बोर्ड, किचन गार्डन और अन्य सुविधाएं भी आईं। एक दिन, एक पूर्व पुलिस पाटिल स्कूल के परिपाठ में शामिल हुए। वे बच्चों के प्रदर्शन से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने स्कूल को एक प्रोजेक्टर भेंट किया। उन्होंने कहा कि हजारों रुपये खर्च कर प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे भी इस स्तर का प्रदर्शन नहीं कर सकते।

गणेश जी कहते हैं कि विनोबा ऐप की मदद से ज़रूरी शैक्षिक सामग्री, सरकारी सर्कुलर और अपडेट आसानी से मिल जाते हैं, जिससे उनका काफी समय बचता है। वे अन्य शिक्षकों से जुड़े भी रहते हैं।

अब गणेश जी जांभोल की स्कूल में एक नई समस्या का सामना कर रहे हैं। यहां अधिकतर आदिवासी और खानाबदोश लोग रहते हैं, जिन्हें शिक्षा में कोई खास दिलचस्पी नहीं है। फिर भी एक साल में, अपने स्वाभाविक ईमानदारी और विनम्रता से उन्होंने गाँववालों के मन में जगह बना ली है। गणेश जी अपने मिशन पर डटे हुए हैं, एक और स्कूल को 'सुंदर शाला' बनाने में।

ताकत - नवाचार और निश्चय की

कई लोगों ने उनके फैसले पर सवाल उठाए। "इतने सारे विकल्प होने के बावजूद आप अपनी बेटी को निजी स्कूल में क्यों नहीं भेजतीं?" और खिलेश्वरी जी का एक ही जवाब रहता था: "अगर हम सरकारी स्कूलों में दूसरे बच्चों को अच्छी शिक्षा देने का दावा करते हैं, तो हमारे अपने बच्चे भी वही शिक्षा क्यों नहीं पा सकते?"

नवीन-तरी (रायपुर): "शिक्षा सिर्फ किताबी पढ़ाई नहीं; उसका अंतिम उद्देश्य है छात्रों का समग्र विकास!"

ये शब्द हैं श्रीमती खिलेश्वरी साहू के, जो रायपुर जिले के नवीन-तरी के सरकारी स्कूल में शिक्षिका हैं।खिलेश्वरी जी का मानना है कि सरकारी शिक्षक अध्यापन के लिए ज़्यादा योग्य (क्वालिफाईड) होते हैं।अगर शिक्षक पूरी तरह से समर्पित हों, तो सरकारी स्कूल में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा सकती हैं। इसी विश्वास के साथ उन्होंने अपनी बेटी तनिष्का को स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मिडीयम सरकारी स्कूल में दाखिल किया।

खिलेश्वरी जी कहती हैं, "मेरी बेटी का स्कूल सरकारी ज़रूर है, लेकिन वहाँ कुछ मूलभूत सुविधाएँ हैं, जैसे पुस्तकालय, खेल का मैदान, सायन्स लैब, कंप्यूटर लैब, अंग्रेज़ी माध्यम, पर्याप्त संख्या में शिक्षक, और ठीकठाक साफ शौचालय, इत्यादि। एक तरफ मैं सोच रही थी की मेरे स्कूल के बच्चों को ये सब कैसे उपलब्ध हो, और एक तरफ मित्रों-सहकर्मियों का दबाव था कि बच्ची को निजी स्कूल में दाखिला करवाया जाए।"

पर समाज की आलोचना से विचलित होने की

हम दिल लगाकर अच्छा काम करने की कोशिश करते रहते हैं, और उसका परिणाम देखकर बहुत खुशी भी होती है। यह सब किसे और कैसे बताएं, ये समझ नहीं आता था। विनोबा ऐप ने वह मंच हमें दिया है। यहाँ काम को सराहा जाता है और दूसरे शिक्षकों का काम भी देखने को मिलता है।

बजाय उन्होंने अपनी स्कूल का जर्जर ढाँचा, साफ-सफाई की कमी जैसी समस्याओं का समाधान ढूँढने पर ध्यान केंद्रित किया। वे दृढ़निश्चय से सरकारी अधिकारियों, स्वयंसेवी संस्थाओं और अभिभावकों की मदद से स्कूल की सुविधाओं में

खिलेश्वरी जी का यह निर्णय केवल व्यक्तिगत नहीं था; यह समाज के सामने एक उदाहरण पेश करने का प्रयास था। उनका उद्देश्य था समाज की धारणाओं को बदलना और यह दिखाना कि सरकारी स्कूल निजी स्कूलों से कम नहीं, बल्कि उनसे भी बेहतर हो सकते हैं। अपनी बेटी को सरकारी स्कूल में दाखिल करके सरकारी शिक्षा व्यवस्था पर विश्वास जगाने का ये साहसी प्रयास था।

सुधार करने में एक एक कदम आगे बढाती रहीं। पुस्तकालय और खेल का मैदान बनवाया। शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए स्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती मिथिला वर्मा के मार्गदर्शन में पीअर-लर्निंग शुरू किए, जिससे छात्रों में स्वाध्याय के साथ नेतृत्व क्षमता विकसित हुई, और शिक्षकों का भार भी कम हुआ। उन्होंने सीमित संसाधनों में भी इंटरएक्टिव टीचिंग से अध्यापन प्रभावी बनाया।

उन्होंने सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित कर के छात्रों की उपलब्धियाँ प्रदर्शित की और धीरे-धीरे सरकारी स्कूलों के प्रति लोगों की धारणाओं को बदल दिया; यह साबित कर दिया कि समर्पण और नवाचार से किसी भी चुनौती का सामना किया जा सकता है। उनके छात्र परीक्षा में बेहतरीन परिणाम ला रहे थे। किसी भी निजी स्कूल के बच्चों की तरह ये छात्र शिष्टाचारी और अनुशासित बन रहे थे।

बदलाव की क्रांति का नेतृत्व कर रही खिलेश्वरी जी को बच्चे करीब से देख भी रहे थे। धीरे-धीरे अन्य शिक्षकों और अभिभावकों की सोच भी बदलने लगी।

नवीन-तरी के शिक्षकों के अथक परिश्रमसे सरकारी स्कूलों के प्रति लोगों की धारणाओं में उल्लेखनीय बदलाव आया है, जो विनोबा शिक्षक सहायक कार्यक्रम को बल देती है। उनके इस कार्य को विनोबा टीम का सादर नमन।

शिक्षा–ग्रामीण या शहरी?

कोसमी (गरियाबंद): हिन्दी के शिक्षक और कोसमी हायर सेकेंडरी स्कूल के प्रभारी प्राचार्य श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव अपने स्कूल के शिक्षकों पर, उनके अनुभव और अध्यापन की तकनीक पर इतना विश्वास करते हैं, कि उन्होंने अपनी बेटी को बेझिझक ग्रामीण अंचल के अपने स्कूल के कक्षा 11 में जीवविज्ञान संकाय में भर्ती कर दिया।

बहुत से लोगों ने प्रश्न किया कि शहर की पढ़ाई छोड़कर कहां अपनी बच्ची को गांव के स्कूल में ले जा रहे हो? "मैं यहाँ के शिक्षकों का नेतृत्व कर रहा हूँ। अगर मुझे लोगों को विश्वास दिलाना होगा कि सरकारी स्कूलों में पढ़कर भी प्रगति संभव है, तो मुझे खुद से शुरुवात करनी होगी।" सुनील जी कहते हैं कि अपनी बेटी के लिए क्या उचित है यह सब सोचकर ही उन्होंने यह निर्णय लिया है।

लेकिन सिर्फ बेटी को सरकारी स्कूल में भर्ती करने से बात पूरी नहीं हुई। अभी उन्हें कई समस्याओं से निपटना है। स्कूल में कई सुविधाएं अब भी नहीं है, क्यूंकि यह स्कूल दूरस्थ क्षेत्र में आता है और पहले से ही दुर्लक्षित रहा है। "शहर से दूर होने की वजह से शिक्षक यहाँ नियुक्ति लेने से कतराते हैं, जबकि छुरा ब्लॉक की स्कूलों में अतिरिक्त शिक्षक हैं," वे बताते हैं।

परिणामस्वरूप कोसमी स्कूल में पिछले कई वर्षों से 3 या 4 ही शिक्षक कक्षा 9 से 12 तक

के विद्यार्थियों को सारे विषय पढ़ाते हैं। एक प्राचार्य के रूप में सुनील जी का श्रेय यही है कि संसाधनों के सतत अभाव में भी यहाँ के शिक्षकों को साथ लेकर चलते रहे और उनका मनोबल टूटने नहीं दिया।

सुनील जी की राय में जो छात्र अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं उनका मनोबल बनाए रखना, और जो कमज़ोर हैं उनको प्रोत्साहित करके उनका मनोबल बढ़ाना, ये एक शिक्षक के लिए सबसे नाजुक काम होता है। पिछले 16 वर्षों से कोसमी की स्कूल में यह काम वे लगातार करते आ रहे हैं। "इसीलिए हर वर्ष बोर्ड परीक्षाओं में हमारे स्कूल का परिणाम 90% से ऊपर ही रहा है। हमारे शिक्षकों की छोटी सी टीम ने बड़े श्रम और समर्पण के साथ अध्यापन का स्तर बनाए रखा है," सुनीलजी बताते हैं।

अध्यापन के क्षेत्र में सुनील जी को 26 वर्ष हो गए हैं। इस दौरान, वे स्वयं एक अच्छे विद्यार्थी भी रहे। हिंदी साहित्य और समाजशास्त्र में एम.ए और फिर बी.एड किया। निरंतर पढ़ने और पढ़ाने का यह जुनून ही शिक्षा की सार्थकता है। इसी तरह कोसमी की स्कूल जैसे पड़ाव विनोबा शिक्षक सहायक कार्यक्रम की यात्रा को भी सार्थक बनाता है।

उल्लेखनीय कार्य : सीईओ आयुषी सिंह यांच्या हस्ते गौरव

विनोबा पुरस्काराने जिल्हा परिषदेच्या २१ शिक्षकांचा सन्मान

लोकमत न्यूज नेटवर्क

गडचिरोली : उल्लेखनीय शैक्षणिक कार्यासाठी जिल्हा परिषदेच्या वतीने २१ शिक्षकांना विनोबा पुरस्काराने सोमवार, १३ ऑक्टोबर रोजी सन्मानित करण्यात आले. पुरस्कार वितरण कार्यक्रमाला मुख्य कार्यकारी अधिकारी आयुषी सिंह, उपशिक्षणाधिकारी (प्राथमिक) विवेक नाकाडे उपस्थित होते.

मुख्य कार्यकारी अधिकारी आयुषी सिंह यांच्या संकल्पनेतून आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहायक कार्यक्रम अर्थात (बा) ॲपला सुरुवात झाली असून, या माध्यमातून शिक्षकांना त्यांचे हक्काचे प्लॉटफॉर्म मिळाले आहे. या माध्यमातून शाळास्तरावर घेण्यात येणाऱ्या विविध उपक्रमांची देवाणघेवाण शिक्षक करू शकतात, साप्ताहिक, मासिक व वार्षिक कार्याचा तपशील एका क्लिकवर बघू शकतात. विनोबा (बा) ॲपच्या माध्यमातून जिल्ह्यातील उपक्रमशील शिक्षकांना प्रत्येक महिन्यात प्रोत्साहनपर पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात येते. बक्षीस वितरणप्रसंगी विनोबा ॲपचे कार्यक्रम व्यवस्थापक विशाल डहाट, जिल्हा समन्वयक गणेश शेंडे व चंदन रापर्तीवार उपस्थित होते.

विविध उल्लेखनीय शैक्षणिक कामगिरी करणाऱ्या शिक्षकांचा जिल्हा परिषदेच्या वतीने सन्मानित करण्यात येते. पुरस्कार वितरण सोहळ्यादरम्यान, जिल्ह्यात नवीन शैक्षणिक वर्षात घेण्यात येणाऱ्या शिष्यवृत्ती सराव परीक्षा, त्यांच्या नियोजनावर चर्चा करण्यात आली. यात उल्लेखनीय कामगिरी करणाऱ्या शिक्षकांनाही सन्मानित करण्यात येणार आहे.

पुरस्कृत शिक्षकांसमवेत जिल्हा परिषदेच्या मुख्य कार्यकारी अधिकारी आयुषी सिंह व उपशिक्षणाधिकारी विवेक नाकाडे.

या शिक्षकांचा झाला सन्मान

- वडधा येथील रणजीत धनसदर, कोरेगाव येथील गुलाब मने, मिचगावचे दोषहर सहारे, कुनघाडाच्या प्रीती नवघडे, मरेगावचे गुणवंत हेडाऊ यांना सप्टेंबर २०२४ चा पोस्ट ऑफ द मंथ पुरस्कार तर कारवाफाचे जितेंद्र रायपुरे, इंदारामच्या ममता वरखडे, गुरवळाच्या रोशनी दातेय, बोडधाचे प्रवीण मुंजमकर, डुम्मेच्या सिंपल मुधोळकर, मोहुर्लीचे मारोती आरेवार, दवंडीच्या निशा पुंडलीककर, गणपूर रै.च्या कोरमा अम्मावार, रांगीच्या भाग्यश्री सयाम, अहेरीचे नीलेश कोडापे यांना वेगवेगळ्या कामासाठी पुरस्कार देण्यात आला. शिवणीच्या हेमलता आखाडे व पाथरगोटाचे निकेश बन्सोड यांना शालेय पुस्तके ठेवण्यासाठी लायब्ररी बॅग देण्यात आली. या पुरस्कारामुळे शिक्षकांना प्रोत्साहन मिळण्यास मदत झाली.

महाराष्ट्र में 'विद्या समीक्षा केंद्र' का उद्घाटन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 अक्टूबर को महाराष्ट्र में विद्या समीक्षा केंद्र (VSK) का उद्घाटन किया, जो डेटा-आधारित शासन के माध्यम से शिक्षा में क्रांति लाने की एक महत्वपूर्ण पहल है। गुजरात में VSK की सफलता के बाद पुणे में यह नया केंद्र इस मॉडल को पूरे देश में विस्तारित करने की प्रधानमंत्री जी की दृष्टि को रेखांकित करता है। महाराष्ट्र के इस नए केंद्र के साथ, अब देशभर में 30 VSK संचालित हैं, जो शिक्षा में जवाबदेही और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं। विद्या समीक्षा केंद्र उन्नत तकनीक और AI का उपयोग करके शैक्षणिक और प्रशासनिक प्रदर्शन की लगातार निगरानी कर सकते हैं।

शैक्षणिक खर्च वाढला, इंग्रजी माध्यमाच्या शाळांची फी परवडेना!

खासगी शाळांची वार्षिक फी हजारो रुपयांच्या घरात

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : आपला पाल्य तीन वर्षांचा झाला की, त्याला शाळेमध्ये प्रवेश घेण्यासाठी पालकांचीच घाई अधिक असते. त्यातही तो इंग्रजी माध्यमाच्या शाळेत असेल तर त्याचे शुल्क पाहूनच अनेकांची झोप उडते. सध्या प्री-प्रायमरीपासून सुरू होणारा शैक्षणिक खर्च उच्च शिक्षणापर्यंत परवडेनासा झाला आहे. अगदी पहिलीपासून दहावीपर्यंत विद्यार्थ्यांचा शाळेचा खर्च हा अव्वाच्या सव्वा येतो.

पालिकेच्या शाळांमध्ये मोफत शिक्षण असले, तरी इंग्रजी शाळांतून शिक्षण घेण्याकडे पालकांचा कल वाढला आहे. विनाअनुदानित, अनुदानित मराठी आणि इंग्रजी माध्यमाच्या शाळांमध्ये पालकांना कमी-अधिक प्रमाणात शैक्षणिक खर्च येत असला, तरी इंग्रजी शाळांत प्रत्येक वर्षी वाढणारे शुल्क सर्वसामान्यांना परवडणारे नाही.

मोफत शिक्षणाकडे पालकांची पाठ

- ग्रामीण भागात जिल्हा परिषद शाळांत, तर मुंबईत पालिका शाळांमध्ये मोफत शिक्षण दिले जात असले, तरी या शाळांमध्ये मूलभूत सुविधा नसल्याचे कारण देत पालक या शाळांमध्ये पाल्याचा प्रवेश घेत नाहीत.
- एकीकडे भरमसाठ शुल्क देऊन इंग्रजी माध्यमाच्या शाळांमध्ये प्रवेश घेणारे पालक जिल्हा परिषदेच्या शाळांमध्ये मोफत आणि दर्जेदार शिक्षण असूनही पाठ फिरवत आहेत.
- ग्रामीण भागातील जिल्हा परिषदेच्या काही शाळांमध्ये मूलभूत सुविधा नसल्याचे कारण देत पालक पाल्यांना इंग्रजी माध्यमांच्या शाळांमध्ये प्रवेश घेताना दिसतात.

इंग्रजी शाळांची वार्षिक फी किती?

इयत्ता पहिली **४० ते ५० हजार**

इयत्ता दुसरी **४० ते ५५ हजार**

इयत्ता तिसरी **५५ ते ६० हजार**

इयत्ता चौथी ते दहावी **७० हजार ते १ लाख**

तज्ज्ञ काय सांगतात?

१ जगभरात इंग्रजीचा बोलबाला वाढत आहे. शासनाच्या धोरणाचाही हा परिणाम आहे. शासन मराठी शाळांना परवानगी देत नाही.

२ मात्र, इंग्रजी माध्यमाच्या शाळांना लगेच परवानगी देते. त्यामुळे यात पालकांना दोष न देता त्यांनीच विवेकी बुद्धीने कालसंगत निर्णय घेणे गरजेचे आहे, असे तज्ज्ञांनी सांगितले.

शहरात प्री-प्रायमरीचे शुल्क किती?

शहर व उपनगरात तर जागोजागी प्री-प्रायमरीच्या इंग्रजी माध्यमाच्या शाळा आहेत. या शाळांचे शुल्क ५० हजार रुपयांपासून एक लाखापर्यंत असते.

शिक्षकांसाठी 'विनोबा' बनतेय ऑनलाइन व्यासपीठ

जि.प.चा उपक्रम : जिल्ह्यातील ३२६४ शाळांची नोंदणी

नाशिक : बदलत्या काळानुसार अध्यापन पद्धतीत होणारे बदल प्रत्येक शिक्षकाला कळावेत, या बदलांचा स्वीकार सर्व शिक्षकांना करता यावा, या उद्देशाने जिल्हा परिषदेने जिल्ह्यातील प्राथमिक शिक्षकांना तंत्रस्नेही करण्यासाठी प्रोत्साहन देणारा नवा प्लॅटफॉर्म निर्माण केला आहे. या प्लॅटफॉर्मचा उपयोग विद्यार्थ्यांची शैक्षणिक गुणवत्ता वाढ आणि शिक्षकांच्या अध्यापन पद्धतीत सुधारणा करण्यासाठी होत आहे. यासाठी 'विनोबा' हे खास मोबाइल ॲप विकसित करण्यात आले आहे. हे ॲप जिल्ह्यातील प्राथमिक शिक्षकांसाठी संज्ञापनाचे ऑनलाइन व्यासपीठ बनत आहे.

जिल्हा परिषदेच्या मुख्य कार्यकारी अधिकारी आशिमा मित्तल यांच्या मार्गदर्शनाखाली पुण्यातील ओपन लिंक्स फाउंडेशनच्या मदतीने हे खास मोबाइल ॲप विकसित केले आहे. ओपन लिंक्स फाउंडेशनचे संजय दालमिया यांच्या टीममार्फत व प्राथमिक शिक्षणाधिकारी नितीन बच्छाव यांच्या समन्वयातून या ॲपच्या माध्यमातून आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहायक कार्यक्रम राबविण्यात येत आहे. या ॲपच्या माध्यमातून शिक्षकांना मदत होत असून, सोप्या पद्धतीने माहिती मिळणे शक्य झाले आहे. विनोबा ॲपद्वारे शैक्षणिक उपक्रम आणि शैक्षणिक पूरक उपक्रम यामध्ये काम करण्यात येत आहे. शैक्षणिक उपक्रमामध्ये इयत्ता ५ वी आणि ८ वी यांची ओएमआर शिटच्या मदतीने शिष्यवृत्ती सराव परीक्षा घेण्यात आली आहे. शैक्षणिक पूरक उपक्रमात विनोबा ॲपमध्ये स्पोकन इंग्लिश, स्पेलिंग बी, रेडिओ मुलाखती आदी उपक्रम राबविण्यात येत आहेत. या उपक्रमाच्या मदतीने विद्यार्थ्यांना इंग्लिश बोलण्यास आणि गणित, बुद्धिमत्ता या विषयामध्ये प्रावीण्य मिळविण्यास मदत होत आहे.

'विनोबा' ॲपचे प्रमुख फायदे

» दर्जेदार आणि गुणवत्तापूर्ण शिक्षणासाठी उपयुक्त » शिक्षकांना अध्यापन पद्धतीत सुधारण्यासाठी फायदेशीर » शाळांमधील, कला, संगीत आदी विविध उपक्रमांची देवाणघेवाण करणे सोपे. » शिक्षकांना अध्यापनविषयक साप्ताहिक नियोजन आणि वर्कसीटमध्ये अधिकाधिक सुधारणा करणे सोपे. » स्पोकन इंग्लिश प्रोग्राममुळे १७८ शाळेतील विद्यार्थ्यांना इंग्लिश सोप्या पद्धतीने शिकविण्यात येत आहे. » स्पेलिंग बी उपक्रमांतर्गत विद्यार्थ्यांकडून स्पेलिंग पाठांतराचा सराव करून घेण्यात येत आहे.

विनोबा ॲप हे शिक्षक आणि विद्यार्थी या दोन्हींसाठी फायदेशीर आहे. यामुळे शिक्षकांना गुणवत्ता वाढीसाठी एक चांगला सोशल मीडिया प्लॅटफॉर्म उपलब्ध झाला असून, जिल्ह्यातील विविध शाळांमधील शैक्षणिक उपक्रम, अध्यापन कौशल्य आदींची देवाणघेवाण करण्यासाठी विनोबा ॲप उपयुक्त ठरत आहे. यामुळे शिक्षकांना गुणवत्ता सुधारण्यासाठी प्रोत्साहन मिळू लागले आहे.

– **आशिमा मित्तल**, मुख्य कार्यकारी अधिकारी

महाराष्ट्र सरकार, NIELIT के बीच MoU

महाराष्ट्र सरकार ने तकनीकी शिक्षा को सशक्त बनाने के लिए राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (NIELIT) के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता महाराष्ट्र राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड, मुंबई के माध्यम से किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, रेल्वे और सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा, "NIELIT और महाराष्ट्र सरकार के बीच यह सहयोग सुनिश्चित करेगा कि छात्रों को उद्योग की मौजूदा आवश्यकताओं के अनुरूप व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त हो।"

कूट प्रश्न 4

Can you solve this?

3, 8, 15, 24, ?

(a) 35 (c) 45

(b) 37 (d) 47

कूट प्रश्न 3 का उत्तर: 15

पुरस्कार राशि दान कर सुरजापुर शिक्षिका ने पेश की मिसाल

रायपुर: सूरजपुर ज़िले की सरकारी प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका विनिता सिंह ने एक प्रेरणादायक मिसाल कायम की है। उन्हें छत्तीसगढ़ के राज्यपाल द्वारा 'राज्य शिक्षक सम्मान' से नवाजा गया था, लेकिन उन्होंने इस पुरस्कार से मिली पूरी राशि अपने स्कूल के विकास के लिए दान कर दी। अब प्रधानाध्यापिका के पद पर पदोन्नत हो चुकीं विनिता जी को उनके अनूठे 'ब्लूटूथ बल्ब मास्टर' नवाचार के लिए भी सराहा गया है।

कोविड-19 महामारी के दौरान बच्चों की पढ़ाई को जारी रखने के लिए उन्होंने इस नवाचार को विकसित किया, जिसके लिए उन्हें 'मुख्यमंत्री शिक्षादूत सम्मान' से भी सम्मानित किया जा चुका है। विनिता ने बताया कि जब वह महामारी के दौरान गांव में मोहल्ला कक्षाएं ले रही थीं, तब उन्होंने एक स्मार्ट ब्लूटूथ स्पीकर बल्ब की उपयोगिता को पहचाना। यह बल्ब ब्लूटूथ के ज़रिए किसी भी स्मार्टफोन या साधारण मोबाइल से जुड़ सकता था और इसके लाउडस्पीकर से ऑनलाइन शैक्षिक सामग्री चलाई जा सकती थी। तब से उन्होंने इस बल्ब का इस्तेमाल अपनी मोहल्ला कक्षाओं में करना शुरू किया। बच्चों के लिए यह तरीका इतना रोचक था कि उनकी उपस्थिति में काफ़ी बढ़ोतरी हो गई और पढ़ाई में उनकी नियमितता भी बनी रही।

उनकी इस पहल के चलते उन्हें 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के अवसर पर 'राज्य शिक्षक सम्मान' प्रदान किया गया। छत्तीदांड़ सरकारी प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक गौतम शर्मा, जहां विनिता ने अपनी पदोन्नति से पहले 15 वर्षों तक सेवाएं दीं, ने उनके समर्पण और मेहनत की प्रशंसा की।

अपने स्कूल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्होंने पुरस्कार की पूरी राशि स्कूल को दान कर दी।

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन
बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **श्री संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **श्रीमती रीना डालमिया**
संपादक: **श्री अमोल मावकर**